मर्यादा पत्र की स्थापना के साथ हुआ मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ

बीदासर, 31 जनवरी, 2009।

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु द्वारा 250 वर्ष पूर्व लिखित मर्यादा पत्र की स्थापना तेरापंथ के दशमाधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने की। इसके साथ ही तेरापंथ के महाकुंभ 145वें मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ हुआ। इससे पूर्व राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के नेतृत्व में युवाचार्य महाश्रमण अपने कर में मर्यादा पत्र थामे सर्व साधु-साध्वियों, समण-समणियों एवं श्रावक-श्राविकाओं के साथ मर्यादा समवसरण में पधारे। जहां सबसे पहले नमोकार महामंत्र का पाठ किया गया।

मर्यादा पत्र की स्थापना के साथ आचार्य महाप्रज्ञ ने इस पत्र को पवित्र आभा मण्डल में लिखा चमत्कारी पत्र बताया। उन्होंने कहा कि पत्र पुराना है, रेखाएं भी पुरानी हो गई है, पर इसमें जो कुछ लिखा गया है वह स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया है। सारी रेखाएं स्वर्णिम बन गई है। यह ऐतिहासिक पत्र किस नक्षत्र में, किस मुर्हत में लिखा गया यह शोध का विषय है। इस मौके पर युवाचार्य महाश्रमण ने मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम की विधिवत घोषणा की।

सेवा वशीकरण मंत्र है : आचार्य महाप्रज्ञ

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने विशेष उद्‌बोधन में कहा कि सेवा वशीकरण मंत्र है। आचार्य प्रवर ने तेरापंथ महासभा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद, अखिल भारतीय महिला मण्डल, अणुव्रत महासमिति एवं 257 अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों संयुक्त गतिविधियों की प्रस्तुति को आवश्यक बताया।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि सेवा एक दूसरे को जोड़ने का कार्य करती है। तेरापंथ में सवो कराने का जिम्मा मुख्यतः आचार्य का होता है। वृद्ध, रोगी व रूग्ण की सेवा करना परम धर्म है। उन्होंने समाज के लिए प्रोत्साहन व प्रेरणा को उपयोगी बातया।

मुनि जयकुमार, साध्वी संघमित्रा ने सेवा की उपयोगिता पर अपने प्रभावक विचार रखे। साध्वी समुदाय ने रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमार ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने की सेवाकेन्द्रों पर नियुक्तियां

आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि जो शरीरधारी है उसको बुढापा भी आता है, बीमारियां भी आती है, क्योंकि शरीर व्याधियों का मंदिर है। आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मर्यादा की साधना तभी हो सकती है जब उनकी पृष्ठीाूमि में सेवा होती है। सेवा नहीं है तो मर्यादा के प्रति निष्ठा पैदा नहीं हो सकती। जिस संगठन में अहं को प्रमुखता दी जाती है और सेवा को गौण कर दिया जाता है वह संगठन कभी संगठित नहीं रह सकता, दीर्घायु नहीं हो सकता।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने तेरापंथ धर्मसंघ में वृद्ध साधु-साध्वियों के सेवा केन्द्रों पर सर्व प्रथम नियुक्तियां की। उन्होंने सबसे पुराने केन्द्र लाडनूं में साध्वी रामकुमारी, बीदासर में साध्वी नगीना, श्रीडूंगरगढ़ में साध्वी जयश्री, गंगाशहर में साध्वी मधुरेखा, राजलदेसर में साध्वी रत्नश्री की नियुक्तियां की। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने मुनियों के सेवा केन्द्र छापर हेतु मुनि आलोक कुमार को नये अग्रणी बनाते हुए उनकी नियुक्ति की। मुनि आलोक आचार्य प्रवर द्वारा दीक्षित मुनियों में प्रथम अग्रणी बनाये गये हैं।

इससे पूर्व साध्वियों की तरफ से मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने सेवा के लिए नियुक्त करने का

निवेदन किया। मुनि वत्सराज ने सेवा को अंतरंग तप बताते हुए मुनियों की तरफ से अर्ज पेश की। स्वयं सेवा का अवसर देने की मांग और आचार्यश्री के द्वारा अचानक की गई नियुक्तियों को समर्पण भाव से स्वीकारोक्ति का दृश्य देख जनसमुदाय हर्ष विभोर हो गया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने बच्चों में संस्कार निर्माण करना, उनका संतुलित व्यक्तित्व निर्माण करने को महत्त्वपूर्ण सेवा बताते हुए कहा कि विदेशों में अनेक केन्द्रों पर समणियां इस कार्य को कर रही है। यह भी बहुत जरूरी है। आचार्य प्रवर ने विदेश केन्द्रों में समणी परमप्रज्ञा, समणी संघप्रज्ञा को ऑरलेण्डो समणी अक्षयप्रज्ञा, समणी विनयप्रज्ञा को ह्यूस्टन समणी मुदित प्रज्ञा, समणी शुक्लप्रज्ञा को लंदन स्थित जैन विश्व भारती केन्द्र में नियुक्त किया। समणी चारित्र प्रज्ञा एवं समणी उन्नतप्रज्ञा जो मियामी विश्वविद्यालय में जैन दर्शन का अध्यापन करवा रही है उनको आगे भी वहीं कार्य करने का निर्देश दिया।

अब लोकतंत्र जातितंत्र बन गया है : आचार्य महाप्रज्ञ

समारोह में जब राजस्थान के शिक्षामंत्री मास्टर भंवरलाल ने अपने विचार रखे, तब राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि अब लोकतंत्र जनता का तंत्र नहीं रहा, जातितंत्र बन गया है। इस कथन के साथ ही जन समुदाय ने 'ओम अर्हम' की हर्ष ध्वनि से सहमति प्रकट की।

कर्णाटक के शिक्षा चिकित्सा मंत्री रामचंद गौड़ा ने कहा कि तेरापंथ का दूसरा नाम सेवा है। उन्होंने कहा कि कर्णाटक में एक प्रसिद्ध कहावत है कि यह मत कहो कि यह तेरा है, बल्कि यह कहो कि यह मेरा है। इसलिए तेरापंथ मेरा पंथ है। यू.जी.सी. के सहसचिव औष्णास्वामी ने कहा कि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय केवल आध्यात्मिक अध्ययन ही नहीं करवाता है बल्कि वहां पर चलने वाली गतिविधियों से मन को शांति भी मिलती है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने विचार रखे। प्रो. राधाऔष्ण ने कर्णाटक शिक्षामंत्री का परिचय प्रस्तुत किया। कर्णाटक विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति रामेगोड़ा, शाहदरा (उद्य ोग प्रकोष्ठ भाजपा) के जिला अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा., अभय दूगड़ आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

बैंगलोर, मुंबई श्रेष्ठ सभा से सम्मानित

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ने अपनी 470 सभाओं में बैंगलोर एवं मुंबई सभा को श्रेष्ठ सभा के रूप में सम्मानित किया। प्रेरणा पुरस्कार में सम्मान स्वरूप महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा एवं प्रायोजक स्व. झूमरमल बच्छावत चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से राजेन्द्र बच्छावत ने बंगलोर सभा एवं मुंबई सभा को 51-51 हजार की राशि, प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। विशिष्ट सभा का सम्मान आर्शीद तेरापंथ सभा को प्रदान किया गया। यह प्रेरणा पुरस्कार स्व. बस्तीमल-सारी बाई छाजेड़ की तरफ से दिया जाता है। जिसमें 31 हजार की राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। सम्मान करने वाली सभाओं मुंबई सभा ने 71 हजार एवं बैंगलोर ने 71 हजार और आर्सीद सभा ने 31 हजार रुपये महासभा को भेंट किये। राशि से समाज निर्माण की गतिविधि ायों को गति दी जायेगी।

आज होगा आचार्य महाप्रज्ञ का 15वां पट्टोत्सव

आज मर्यादा महोत्सव के दूसरे दिन आचार्य महाप्रज्ञ का 15वां पट्टोत्सव का आयोजन होगा। उक्त जानकारी देते हुए मुनि जयंतकुमार ने बताया कि आज अनेक साधु-साध्वियों के द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ की अभ्यर्थना की जायेगी और आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व एवं कर्त्तृत्व पर प्रकाश डाला जायेगा।

- अशोक सियोल

मीडिया प्रतिनिधि

9982903770